वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 387
ISBN-978-93-82071-71-6

तीस चौबीसी स्तुति

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव-2012, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के रजत दीक्षा महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	श्रावण शु. एकादशी, 17 अगस्त 2013	16/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

प्रवचनसार ग्रंथ में आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव ने कहा है–

जीव के शुभ, अशुभ परिणाम ही उसे तदनुरूप फल प्रदान करते हैं। अशुभोपयोग से यह जीव तिर्यंच, नारकी एवं कुमानुष होकर सहस्रों दुःखों को सहन करता हुआ संसार में परिभ्रमण करता है और धर्म से परिणत होकर शुभोपयोग से स्वर्ग सुख और शुद्धोपयोग से निर्वाण प्राप्त कर लेता है।

जीव के जन्म-जन्मान्तरों का पुण्य संचित होकर एक साथ उदय में आने पर ही उसे जिनधर्म, जिनवाणी एवं गुरुवाणी सुनने का साधन प्राप्त होता है, जिससे शुभोपयोग में जीव का समय व्यतीत होता है अन्यथा तो सभी संसारी प्राणी दिन रात अशुभोपयोग अर्थात् पाप क्रियाओं में रत रहते हैं और संक्लेशित होकर अपार कष्ट उठाते हैं। कहने का अभिप्राय मात्र इतना ही है कि अशुभोपयोग के बचने के लिए प्रत्येक श्रावक को भगवान की भक्ति, पूजा, स्तोत्र पाठ, तीर्थयात्रा तथा सत्पात्र में दानादि करना चाहिए, जो शुभोपयोग के अंग हैं। कुन्दकुन्द स्वामी ने तो श्रावकों के लिए ''दाणं पूजा मुक्खो सावय धम्मो ण सावया तेण विणा'' कहा है अर्थात् श्रावक के लिए दान और पूजन आदि दोनों ही आवश्यक हैं उनके बिना वह श्रावक नहीं कहलाता है। पूजन, स्तोत्र पाठ द्वारा जिनेन्द्रभक्ति की परम्परा सर्वप्राचीन हैं, बड़े-बड़े दिग्गज आचार्यों जैसे समन्तभद्र, मानतुंग आदि के द्वारा स्तोत्र रचना कर जिनधर्म की महिमा का चमत्कार दर्शाने का वर्णन शास्त्र-पुराणों में वर्णित है।

उसी क्रम में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य लेखन का अनुपमेय कार्य करते हुए 300 ग्रंथों का लेखन किया है, जिसमें उच्चकोटि के ग्रंथों के साथ-साथ अनेक स्तोत्र रचनाएं भी की हैं, जिसमें से अनेक स्तोत्रों का चमत्कार देखने में आया है, स्तोत्र रचना में उनकी यह सुन्दर कृति ''तीस चौबीसी स्तुति'' है, जिसके द्वारा पाठकगण भगवत् भक्ति करते हुए उनके जीवन से परिचित हों और महान पुण्य का संचय करें, साथ ही ऐसी अनमोल कृतियों की प्रदात्री पूज्य माताजी स्वस्थ एवं चिरायु रहते हुए हम पर अपना ज्ञानमयी-वात्सल्यमयी वरदहस्त बनाए रखें, यही वीरप्रभू के चरणों में विनम्र प्रार्थना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

अनादिनिधन मध्यलोक में असंख्यातों द्वीप-समुद्रों में थाली के समान आकार वाला सर्वप्रथम द्वीप जम्बूद्वीप है। इसमें पूर्व-पश्चिम लम्बे ऐसे छह पर्वत हैं, जिनके नाम हैं– हिमवान्, महाहिमवान, निषध, नील, रुक्मी और शिखरी, इन पर्वतों से विभाजित भरत, हैमवत आदि सात क्षेत्र हैं, जिसमें चतुर्थ क्षेत्र विदेह क्षेत्र के बीचों-बीच में सुमेरु पर्वत है। भरत और ऐरावत क्षेत्र के बीचोंबीच में विजयार्ध पर्वत एवं हिमवान पर्वत के पद्म सरोवर से गंगा-सिंधु नदियों के विजयार्ध पर्वत में प्रवेश कर बाहर आकर लवण समुद्र में प्रवेश करने से भरत-ऐरावत के छह-छह खण्ड हो जाते हैं, जिसमें से समुद्र की तरफ से मध्य का आर्यखण्ड तथा शेष 5 म्लेच्छ खण्ड हैं, इन आर्यखण्डों में षट्काल परिवर्तन होता रहता है।

इस जम्बूद्वीप को वेष्टित कर लवण समुद्र, पुनः धातकीखण्ड द्वीप, पुनः कालोदधि समुद्र, पुनः पुष्करद्वीप है, इसके मध्य में चूड़ी के आकार वाला मानुषोत्तर पर्वत है इसीलिए इस द्वीप के इधर के भाग को अर्ध पुष्कर कहते हैं, यहीं तक मनुष्य लोक की सीमा है। जम्बूद्वीप में जिस प्रकार सुमेरु पर्वत है उसी प्रकार धातकीखण्ड के पूर्व धातकीखण्ड में विजय मेरु, पश्चिम धातकीखण्ड में अचल मेरु, पूर्व पुष्करार्ध द्वीप में मंदरमेरु एवं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप में विद्युन्माली मेरु है। इन सबमें जम्बूद्वीप के समान ही छह पर्वत एवं सात-सात क्षेत्र हैं। इस प्रकार जम्बूद्वीप का एक भरत, धातकीखण्ड के दो और पुष्करार्ध के दो ऐसे पाँच भरत क्षेत्र और इसी प्रकार पाँच ऐरावत क्षेत्र हैं। इन प्रत्येक क्षेत्र के आर्यखण्ड में चतुर्थकाल में चौबीस-चौबीस तीर्थंकर होते हैं, वर्तमान में हुए हैं और भविष्यत्काल में होंगे, इस अपेक्षा से तीन काल संबंधी तीर्थंकरों की तीस चौबीसी हो जाती हैं।

उन्हीं तीस चौबीसी भगवन्तों की स्तुति द्वारा आराधना कर कर्मनिर्जरा करने एवं महान पुण्य का संचय करने का सौभाग्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की निष्कलंक परम्परा की महान साध्वी, बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी, आगम को अपना प्राण मानने वाली परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने हमें प्रदान किया है। जैनागम के चतुरनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त कर जिनागमरूपी महासमुद्र से उच्चकोटि के 300 ग्रंथों की संसृजना कर जिनशासन पर महान उपकार करने वाली पूज्य माताजी की यह कृति भी स्वयं में अद्भुत एवं वंदनीय है, जिसे उन्होंने सन् 1987 में लिखा है। इसके द्वारा भव्यात्मा जीव भूत-भविष्यत् एवं वर्तमानकालीन तीर्थंकरों की भक्ति कर महान पुण्य का संचय करें, यही शुभेच्छा है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम – क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा– भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

ईसवी सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई 1974 में एक भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी 1975 में एक लघुकाय जिनालय का निर्माण किया गया, जो सन् 1990 में एक अनोखे 'कमल मंदिर' के रूप में निर्मित हुआ है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर से यह अतिशय क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण– जुलाई सन् 1974 में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगम वर्णित सुमेरुपर्वत (101 फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् 1979 में एवं सन् 1985 में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत के अंदर से निर्मित 136 सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं, तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

यात्री सुविधा– हस्तिनापुर तीर्थ में जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त 200 कमरे, 50 से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ सुन्दर भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त 2 किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाएँ आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

हस्तिनापुर कैसे पहुँचे ?– भारत की राजधानी दिल्ली से 110 किमी. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से 40 किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यी बस अड्डे अथवा आनंद विहार बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। मेरठ से भी प्रति आधे घंटे के अंतराल से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पहुँचने हेतु रोडवेज की बसें सुलभता के साथ उपलब्ध रहती हैं। 'जम्बूद्वीप' के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और जम्बूद्वीप से ही मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि यात्रा हेतु बसें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली और मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर इस धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवांछित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

अतिशयकारी स्तुतियों को अवश्य पढ़ें!

-आर्यिका चन्दनामती

मध्यलोक में ढाई द्वीपों के अन्तर्गत पाँच भरत और पाँच ऐरावत क्षेत्रों में होने वाले भूत-भविष्यत् एवं वर्तमानकाल संबंधी तीस चौबीसी तीर्थंकर भगवन्तों की स्तुति एवं मंत्र इस पुस्तक में प्रस्तुत किये गये हैं।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य की प्रत्येक विधा को अपनाते हुए समाज के हर वर्ग को पुण्य प्राप्ति का माध्यम प्रदान किया है। इसीलिए प्रौढ़ संस्कृतज्ञ विद्वान्, सामान्य विद्वान्, प्रोफेसर, पण्डित, नारी, युवा, बालक सभी इनके साहित्य से प्रभावित रहते हैं। जहाँ संस्कृत में धाराप्रवाह टीका लिखकर नियमसार, षट्खण्डागम जैसे दुरूह ग्रंथों का मर्म प्रगट किया है, वहीं संस्कृत पद्य लेखन के द्वारा स्तोत्र साहित्य को भी समृद्ध बनाया है। आराधना (444 श्लोकों में मुनि-आर्यिकाओं की चर्यासंबंधी ग्रंथ), कल्याणकल्पतरु स्तोत्र (एक अक्षरी से 35 अक्षरी छंदों में निबद्ध चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति एवं छंद का ज्ञान कराने वाला ग्रंथ) एवं अनेकानेक स्तुतियाँ इनके गहनज्ञान का परिचायक है।

व्याकरण-छंद-अलंकार और कोष इन चारों का समावेश इनकी प्रत्येक कृति में परिलक्षित होता है। प्रस्तुत "तीस चौबीसी स्तुति" नामक पुस्तक में भी संस्कृत-हिन्दी दोनों प्रकार के पद्यों से सात सौ बीस तीर्थंकर भगवन्तों का स्तवन किया गया है, जो बिल्कुल सरल भाषा में होने के कारण दैनिक पाठ के लिए भी बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे।

मैं कई बार चिन्तन करती हूँ कि पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी पूर्व जन्म का महान पुण्य तो लेकर आई ही हैं, इस जन्म में भी इन्होंने भगवन्तों की भक्ति के द्वारा असीम पुण्य संचित किया है जो इन्हें शीघ्र मोक्षगामी बनाने वाला है। इन्होंने आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी के समान अध्यात्म और भक्ति दोनों का अवलम्बन लेकर न केवल ग्रंथ रचना की है, प्रत्युत् जीवन में साक्षात् दोनों विधाओं को आत्मसात किया है, यही कारण है कि शारीरिक, मानसिक, आगंतुक किसी भी विषम परिस्थिति में इनका धैर्य डगमगाता नहीं है बल्कि वे परिस्थितियों इन्हें मेरुसम दृढ़ता प्रदान करती हैं।

भगवान जिनेन्द्र से मेरी यही प्रार्थना है कि इनके समान हमें ज्ञान भले ही प्राप्त न हो किन्तु इनके जैसी जिनेन्द्रभक्ति हमारी आत्मा के अंदर भी प्रगट हो ताकि मैं भी शीघ्र संसार समुद्र को पार करके अपनी आत्मा को परमात्मा बना सकूँ। सभी श्रद्धालु नर-नारी इस कृति से तीस चौबीसी भगवन्तों की स्तुति-मंत्र आदि पढ़कर खूब पुण्य का अर्जन करें, यही मंगल प्रेरणा है।

विषय-सूची

क्र.सं.		पृष्ठ
1.	श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिनाम स्तुति	1
2.	श्री तीस चौबीसी नामावली स्तुति	2
3.	जम्बूद्वीप भरत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति	3
4.	जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति	5
5.	पूर्व धातकीखण्ड द्वीप भरत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति	7
6.	पूर्व धातकीखण्ड द्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति	9
7.	पश्चिम धातकीखण्ड द्वीप भरत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति	11
8.	पश्चिम धातकीखण्ड द्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति	13
9.	पूर्व पुष्करार्ध द्वीप भरत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति	15
10.	पूर्व पुष्करार्ध द्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति	17
11.	पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप भरत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति	19
12.	पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति	21
13.	इष्टप्रार्थना	23
14.	प्रशस्ति	23
15.	तीस चौबीसी मंत्र	25
16.	भजन	40

तीस चौबीसी स्तुति एवं मंत्र

अनादिनिधन मूलमंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

श्री त्रिंशच्चतुर्विंशतिनाम स्तुतिः

सिद्धिं प्राप्ताश्च प्राप्स्यंति, भूता सन्तश्च भाविनः।
भरतैरावतोद्भूतास्तीर्थंकरा अवंतु मां।।१।।
जंबूद्वीपेऽत्र विख्याते, मध्यलोकस्य मध्यगे।
भरतो दक्षिणे भागे, उदीच्यैरावतो मतः।।२।।
पूर्वस्मिन् धातकीद्वीपेऽपरधात्र्यामपि त्विमौ।
भरतैरावतौ द्वौ द्वौ, दक्षिणोत्तर भागिनौ।।३।।
पूर्वार्धपुष्करेप्येवं, पश्चिमार्धे तथेदृशौ।
भरतैरावते क्षेत्रे, अपागुदग्दिशोश्च ते।।४।।
पंच भरतक्षेत्राणि, पंचैवैरावतान्यपि।
दशैषामार्यखंडेषु, षट्कालपरिवर्तनं।।५।।
चतुर्थेऽप्यागते काले चतुर्विंशतयो जिनाः।
तीर्थेश्वराः भवंतीह, धर्मतीर्थप्रवर्तकाः।।६।।

भूतकाले भवा एते, वर्तमानेऽप्यनागते।
भवंति च भविष्यंति, तेभ्यो नित्यं नमोऽस्तु मे।।७।।
एवं दशसु क्षेत्रेषु, त्रिकालापेक्षया इमे।
त्रिंशच्चतुर्विंशास्ते, तीर्थेशाः संतु मे श्रियै।।८।।
आस्तां स्तवनमेतेषां, सप्तशतस्य विंशतेः।
नामभिरपि स्तवनात्, को नाम दुःखनामभाक्।।९।।
एवं ज्ञात्वैव सद्भक्त्या, सुत्रिंशच्चतुर्विंशतेः।
जिननामानि प्रीत्याहं, कीर्तयामि स्वसिद्धये।।१०।।

श्री तीस चौबीसी नामावली स्तुति

-शंभु छंद-

सिद्धी को प्राप्त हुए होते, होवेंगे भरतैरावत में।
ये भूत भवद् भावी जिनवर, मेरे भी रक्षक हों जग में।।
इस मध्यलोक के मध्य प्रथित, वर जम्बूद्वीप प्रमुख जानो।
उसके दक्षिण में भरत तथा, उत्तर में ऐरावत मानो।।१।।

पूरब औ अपर धातकी खंड, द्वीप में दक्षिण उत्तर में।
दो भरत और दो ऐरावत, ये चार क्षेत्र होते द्वय में।।
इस पुष्करार्ध पूरब पश्चिम, दोनों के दक्षिण उत्तर में।
इक एक भरत ऐरावत से, ये चार क्षेत्र होते दो में।।२।।

ये पांच भरत औ ऐरावत, हैं पांच इन्हीं दश के मधि में।
जो आर्यखंड हैं उन सबमें, षट्काल परावर्तन सच में।।
जो चौथा काल वर्तता है, तब चौबिस तीर्थंकर होते।
ये जग में धर्मचक्रमय तीर्थ, प्रवर्तक तीर्थेश्वर होते।।३।।

ये भूतकाल में हुए तथा, होते हैं वर्तमान युग में।
होवेंगे तथा भविष्यत में उन सबको हो नमोस्तु नित मे।।

इस विध दश क्षेत्रों में त्रिकाल, संबंधी तीर्थंकर जो हैं।
ये तीसों चौबीसी जिनवर, मेरे को शिवलक्ष्मी देवें।।४।।
इनकी स्तुति तो दूर रहे, इन सात शतक बीसों जिन का।
बस नाम मात्र ही लेने से, नहिं दुख का नाम भि हो सकता।।
यह जान परम भक्ती से ही, तीसों चौबीसी जिनवर का।
निज सिद्धी हेतु प्रीती से, मैं नाम स्तवन करूँ उनका।।५।।

(१)

जम्बूद्वीप भरत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

निर्वाणः सागरो देवो, महासाधुर्जिनेश्वरः।
विमलप्रभश्रीधरौ, श्रीसुदत्तोऽमलप्रभः।।१।।
उद्धरोऽङ्गिरसन्मती, श्रीसिन्धुः कुसुमाञ्जलिः।
शिवगणाख्य उत्साहो, ज्ञानेशः परमेश्वरः।।२।।
विमलेशो यशोधरः, कृष्णो ज्ञानमतिर्जिनः।
शुद्धमतिश्च श्रीभद्रोऽतक्रान्तः शांतनामभाक्।।३।।
वृषभोऽजितनामा च, संभवश्चाभिनंदनः।
सुमतिश्च पद्मप्रभः, सुपार्श्वश्चन्द्रतीर्थकृत्।।४।।
सुविधिः शीतलो श्रेयान्, वासुपूज्यः सुरैर्नुतः।
विमलोऽनंततीर्थेशो, धर्मः शांतिजिनेश्वरः।।५।।
कुंथुनाथोऽरनाथश्च, मल्लिश्च मुनिसुव्रतः।
नमिर्नेमिर्जिनः पार्श्वो, वर्धमानः पुनातु मां।।६।।
महापद्मः सुरदेवः, सुपार्श्वश्च स्वयंप्रभः।
सर्वात्मभूताख्यो देव-पुत्रश्च कुलपुत्रकः।।७।।
उदंकः प्रौष्ठिलो नाथो, जयकीर्त्यभिधो जिनः।
मुनिसुव्रतोऽरनाथो, निष्पापः निष्कषायकः।।८।।
विपुलो निर्मलश्चित्र-गुप्तः समाधिगुप्तकः।
स्वयंभूरनिवर्तको, जयश्च विमलो जिनः।।९।।

देवपालोऽनंतवीर्यो, जंबूद्वीपस्य भारते।
संति मे पांतु तीर्थेशाः, भूतसंप्रतिभाविनः।।१०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(१)

जम्बूद्वीप भरत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

श्रीमन् निर्वाण प्रभू सागर, औ महासाधु विमलप्रभु हैं।
श्रीधर सुदत्त औ अमलप्रभू, उद्धर अंगिर सन्मति प्रभु हैं।।
सिंधूजिन कुसुमांजलि शिवगण, उत्साह तथा ज्ञानेश्वर हैं।
परमेश्वर विमलेश्वर यशधर, जिनकृष्ण ज्ञानमति जिनवर हैं।।१।।

प्रभु शुद्धमति श्री भद्रनाथ, अतिक्रांत शांत प्रभु तीर्थंकर।
इस भरतक्षेत्र में भूतकाल के, चौबिस जिनवर मंगलकर।।
श्री वृषभ अजित औ संभवजिन, अभिनंदन सुमति पदमप्रभ हैं।
जिनवर सुपार्श्व श्री चंद्रप्रभू, सुविधि शीतल श्रेयान जिन हैं।।२।।

श्रीवासुपूज्य औ विमलदेव, श्रीमन् अनंत प्रभु धर्मनाथ।
शांतीश्वर कुंथु अरह मल्ली, मुनिसुव्रत नमि और नेमिनाथ।।
श्री पार्श्वनाथ जिन वर्धमान, ये वर्तमान चौबीस प्रभो।
संप्रति जिनका शासन उत्तम, जयशील रहें वे वीर प्रभो।।३।।

श्री महापद्म सुरदेव तथा, सूपार्श्व स्वयंप्रभ जिनवर हैं।
सर्वात्मभूत औ देवपुत्र, कुलपुत्र उदंक सु प्रौष्ठिल हैं।।
जयकीर्ति मुनिसुव्रत अरजिन, निष्पाप तथा निष्कषाय हैं।
श्रीविपुल सु निर्मल चित्रगुप्त, श्रीमन् समाधिगुप्ताख्य कहे।।४।।

जिनराज स्वयंभू अनिवर्तक, जयनाथ विमल औ देवपाल।
जिनदेव अनंतवीर्य होंगे, ये भावी जिनवर जगत्पाल।।
इस जंबूद्वीप सुसंबंधी, भरतार्य खंड के तीर्थंकर।
ये भूतभवद् भावी उनको, मैं नमूं सदा वे मंगलकर।।५।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(२)

जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

पंचरूपो जिनधरः सांप्रतिकोर्जयंतकौ।
आधिक्षायिकनामा चा-भिनंदनो जिनो मतः।।१।।
रत्नसेनाभिधो रामे-श्वरोऽनंगोज्झितश्च वै।
विन्यासोऽरोषसुविधा-नौ प्रदत्तः कुमारकः।।२।।
सर्वशैलः प्रभंजनः, सौभाग्यनाथतीर्थकृत्।
व्रतविन्दुः सिद्धिकरो, ज्ञानदेहः कल्पद्रुमः।।३।।
तीर्थफलेशो दिनकृत्, वीरप्रभ इमे जिनाः।
बालचन्द्रः सुव्रताख्यो-ऽग्निसेनो नंदिसेनकः।।४।।
श्रीदत्तोव्रतधराख्यः, सोमचंद्रोऽतिदीर्घभाक्।
शतायुष्यो विवसितः, श्रेयांश्च विश्रुतजलः।।५।।
सिंहसेनोपशांतौ च, गुप्तशासननामभाक्।
अनंतवीर्यपार्श्वौ चा-भिधानो मरुदेवकः।।६।।
श्रीधरः शामकण्ठश्चा-प्यग्निप्रभोऽग्निदत्तभाक्।
वीरसेनो जिनाश्चैते संप्रत्यैरावतोद्भवाः।।७।।
सिद्धार्थो विमलाख्यश्च, जयघोषाह्वयो जिनः।
नंदिसेनाभिधः स्वर्ग-मंगलः वज्रधृन्मतः।।८।।
निर्वाणो धर्मकेतुश्च, सिद्धसेनश्च तीर्थराट्।
महासेनो रविमित्रः, सत्यसेनचंद्राह्वयौ।।९।।
महीचन्द्रः श्रुतांजनो, देवसेनश्च सुव्रतः।
जिनेन्द्राख्यः सुपार्श्वश्च, सुकौशलो ह्यनंतभाक्।।१०।।
विमलोऽमृतसेनश्चा-प्यग्निदत्तो जिना इमे।
प्राग्द्वीपैरावते ख्याता-स्त्रैकालिकाः पुनंतु मां।।११।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(२)

जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

श्री पंचरूप जिनधर स्वामी, सांप्रतिक प्रभु उर्जयंत हैं।
आधिक्षायिक अभिनंदन औ, श्री रत्नसेन रामेश्वर हैं।।
श्री अनंगउज्झित विन्यास प्रभु, अशेष औ सुविधान कहे।
प्रादत्त कुमार अरु सर्वशैल सु प्रभंजन सौभाग्येश कहे।।१।।

व्रतविंदु सिद्धिकर ज्ञानदेह, कल्पद्रुम तीर्थफलेश कहें।
दिनकर श्रीवीरप्रभू जिनवर, ये चौबिस भूतकाल के हैं।।
श्री बालचंद्र सुव्रत जिनवर, श्री अग्निसेन औ नंदिसेन।
श्रीदत्त व व्रतधर सोमचंद्र, धृतिदीर्घ शतायुष सौख्य देन।।२।।

विवसित श्रेयान सु विश्रुतजल, श्रीसिंहसेन उपशांत नाम।
श्रीगुप्त शासन अनंतवीर्य, श्रीपार्श्वनाथ औ अभीधान।।
मरुदेव श्रीधर शामकंठ, अग्नीप्रभ अग्नीदत्त नाम।
श्रीवीरसेन ऐरावत के, संप्रति जिनवर को नित प्रणाम।।३।।

सिद्धार्थ विमल जयघोष, नंदिसेनाख्य स्वर्गमंगल जिन हैं।
वज्राधारी निर्वाण धर्मध्वज, सिद्धसेन महसेन कहे।।
रविमित्र सत्यसेनाख्य चंद्र, महिचंद्र श्रुतांजन देवसेन।
सुव्रत जिनेंद्र सुपार्श्व सुकौशल, श्रीअनंत सब सिद्धि देन।।४।।

श्रीविमल सु अमृतसेन नाम, श्रीअग्निदत्त जिनभावी हैं।
ये ऐरावत में होवेंगे श्रीजिनवर धर्मप्रभावी हैं।।
इन भूतकाल औ वर्तमान, भावी जिनका नित करूँ नमन।
इस जंबूद्वीप ऐरावत के, तीर्थंकर को शत शत वंदन।।५।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(३)

पूर्व धातकीखण्ड द्वीप भरतक्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

रत्नप्रभोऽमितनाथः, शंभवश्चाकलंकभाक्।
चंद्रस्वामी शुभंकरः, तत्त्वनाथश्च सुंदरः।।१।।

पुरंधरः स्वामिनामा, देवदत्तश्च नामभाक्।
वासवदत्तश्रेयांसौ, विश्वरूपो जिनेश्वरः।।२।।

तपस्तेजाश्च श्रीपति-बोधः सिद्धार्थनामकः।
संयमो विमलश्चापि, देवेन्द्रः प्रवराह्वयः।।३।।

विश्वसेनो मेघनंदी, त्रिजेतृकाभिधो जिनः।
चतुर्विंशतितीर्थेशा, भूतकालोद्भवा इमे।।४।।

श्रीयुगादिश्च सिद्धांतो, महेशनाथतीर्थराट्।
परमार्थनाथो देवः, समुद्धरश्च तीर्थकृत्।।५।।

भूधरनाथ उद्योतः, आर्जवश्चाभयाभिधः।
अप्रकंपः पद्मनाथः, पद्मनंदी प्रियंकरः।।६।।

सुकृतो भद्रनाथश्च, मुनिचंद्रो जिनेश्वरः।
पंचमुष्टिः त्रिमुष्टिश्च, गांगिको गणनायकः।।७।।

सर्वांगश्चापि ब्रह्मेन्द्र, इन्द्रदत्तोऽपि नायकः।
वर्तमाना जिनाः स्युर्मे, श्रियै प्राग्धातकीभवाः।।८।।

सिद्धार्थश्च सम्यग्गुणो, जिनेन्द्रनाथ इत्यपि।
संपन्नः सर्वस्वामी च, मुनिनाथो विशिष्टजित्।।९।।

अमरेशो ब्रह्मशांतिः, पर्वनाथोऽप्यकामुकः।
ध्याननाथश्च कल्पाख्यः, संवरः स्वास्थ्यनायकः।।१०।।

आनंदोऽथ रविप्रभः, चन्द्रप्रभः सुनंदकः।
सुकर्णश्च सुकर्माप्य-ममः पार्श्वजिनेश्वरः।।११।।

शाश्वताश्चेत्यमीः पूर्व-धातकीभरतोद्भवाः।
त्रैकालिकाः प्रसीदंतु मामवंतु जिनाः सदा।।१२।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(३)

पूर्व धातकीखण्ड द्वीप भरतक्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

रत्नप्रभ अमितनाथ शंभव, अकलंक चंद्रस्वामी जिनवर।
श्रीमान् शुभंकर तत्त्वनाथ, सुंदर व पुरंदर स्वामीवर।।
श्री देवदत्त वासवदत्तं, श्रेयांस व विश्वरूप जिन हैं।
जिन तपस्तेज श्रीपतीबोध, सिद्धार्थ व संयम विमल कहे।।१।।
देवेन्द्र प्रवर श्रीविश्वसेन, जिन मेघनंदि त्रिजेतृक हैं।
ये पूर्वधातकी भरतक्षेत्र, के भूतकाल तीर्थंकर हैं।।
जिन श्रीयुगादि सिद्धांत तथा, श्रीमहेशपति परमार्थनाथ।
समउद्धर भूधरनाथ प्रभू, उद्योत व आर्जव अभयनाथ।।२।।
जिन अप्रकंप श्रीपद्मनाथ, जिन पद्मनंदि व प्रियंकर हैं।
सुकृत श्रीभद्रनाथ जिनवर, मुनिचंद्र पंचमुष्टि जिन हैं।।
त्रिमुष्टी गांगिक गणनाथं, सर्वांगदेव ब्रह्मेन्द्र कहे।
श्री इंद्रदत्त औ नायकजिन, ये वर्तमान तीर्थेश कहे।।३।।
सिद्धार्थ तथा सम्यग्गुण और, जिनेंद्रनाथ संपन्ननाथ।
श्री सर्वस्वामि मुनिपति विशिष्टजिन अमरनाथ श्रीब्रह्मशांति।।
पर्वेश अकामुक ध्याननाथ, श्रीकल्प और संवरजिन हैं।
श्री स्वास्थ्यनाथ आनंद, रवीप्रभ चंद्रप्रभू सुनंदन हैं।।४।।
सुकर्ण सुकर्म अमम पारस, शाश्वत ये चौबिस नाम कहे।
उस पूर्व धातकीखंड द्वीप में भरतक्षेत्र इस सदृश रहे।।
जब चौथा काल वहाँ होवे, तब ही तीर्थंकर होते हैं।
इन भूत भवद् भावी जिनका, हम वंदन कर मल धोते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(४)

पूर्व धातकीखण्ड द्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

श्री वज्रस्वाम्युदत्तश्च, सूर्यराट् पुरुषोत्तमः।
शरणस्वाम्यवबोधो, विक्रमोऽथ निर्घंटिकः।।१।।

हरीन्द्रः परत्रेरितो, निर्वाणः सूरिनामकः।
धर्महेतुश्चतुर्मुखः, सुकृतेन्द्राह्वयो जिनः।।२।।

श्रुताम्बुश्च विमलार्को, देवप्रभो धरापतिः।
सुतीर्थ उदयानंदः, सर्वार्थो धार्मिकोऽपि च।।३।।

क्षेत्रस्वामी हरिश्चन्द्रः, चतुर्विंशा इमे जिनाः।
धातक्यैरावतोद्भूताः, संतु मे विघ्नशांतये।।४।।

अपश्चिमः पुष्पदंतो-ऽप्यर्हो चारित्रनामभाक्।
सिद्धानंदो नंदगश्च, पद्मकूपाभिधो जिनः।।५।।

उदयनाभी रुक्मेन्दुः, कृपालुः प्रौष्ठिलस्तथा।
सिद्धेश्वरोऽमृतः स्वामी, भेनलिंगः सर्वरथः।।६।।

मेघनंदो नंदिकेशो, हरिस्तथाधिष्ठो जिनः।
शांतिको नंदिस्वामी च, कुंदपार्श्वः विरोचन।।७।।

प्रवरवीरतीर्थेशो, विजयप्रभसत्पदौ।
महामृगपतिर्श्विता-मणिस्त्वशोकिनामभाक्।।८।।

द्विमृगेन्द्रोपवासिकौ, पद्मेंदुबोधकेन्द्रपि।
चिंताहिम उत्सहिको-ऽप्यपाशिवः सुरोदकः।।९।।

नारिकोऽनवद्यश्च, नागपतिर्नीलोत्पलः।
अप्रकंपः पुरोहितो, भिंदकः पार्श्वनामकः।।१०।।

निर्वाचो विरोषिकश्चे-त्यमीः तीर्थंकराः जिनाः।
प्राग्धात्र्यैरावते ख्यातार-त्रैकालिका अवंतु मां।।११।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

(४)

पूर्व धातकीखण्ड द्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

श्रीवज्रस्वामि श्री उदत्तनाथ, सूर्यस्वामी पुरुषोत्तम हैं।
श्रीशरणस्वामि अवबोध व विक्रम, निर्घंटिक व हरीन्द्र जिन हैं।।
परत्रेरित निर्वाणसूरि, जिन धर्महेतु व चतुर्मुख हैं।
सुकृतेन्द्र श्रुतांबु विमलसूर्य, श्री देवप्रभु धरणेन्द्र कहे।।१।।

सुतीर्थनाथ उदयानंदी, सर्वार्थ धार्मिक नाथ कहे।
श्री क्षेत्रस्वामि जिन हरिश्चन्द्र, ऐरावत के जिननाथ रहे।।
जिनराज अपश्चिम पुष्पदंत, श्री अर्हदेव चारित्र प्रभो।
श्री सिद्धानंद व नंगद जिन, श्री पद्मकूप उदयनाभि विभो।।२।।

रुक्मेंदु कृपालु प्रोष्ठिल जिन, सिद्धेश्वर अमृत स्वामी हैं।
श्री भेनलिंग जिन सरवारथ, श्री मेघनंदि जिननामी हैं।।
श्री नंदिकेश हरि जिन अधिष्ठ, शांतिक नंदिस्वामी जिन हैं।
श्री कुंदपार्श्व जिनराज विरोचन, वर्तमान तीर्थंकर हैं।।३।।

श्री प्रवरवीर जिन विजयप्रभू, सत्पद प्रभु महामृगेन्द्र कहे।
चिंतामणि नाथ अशोकिदेव, द्विमृगेन्द्र और उपवासिक हैं।।
श्री पद्मचंद्र बोधकइंदु, चिंताहिम उत्सहिकाख्य नाथ।
श्री अपाशिव-देव जल नारिक, अनवद्य सु नागेन्द्राख्य नाथ।।४।।

नीलोत्पल अप्रकंप जिनवर, सु पुरोहित भिंदक पार्श्वनाथ।
निर्वाच विरोषिक ये जिनवर, भावी ऐरावत के विख्यात।।
इस विध पूरवधातकी द्वीप, में ऐरावत क्षेत्रोद्भव हैं।
जिन भूत संप्रती भावी हैं, उनको मेरा नित वंदन है।।५।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

(५)

पश्चिम धातकीखण्ड द्वीप भरत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

वृषभो प्रियमित्रश्च, शांतीशः सुमतिर्जिनः।
आदिनाथोऽतिव्यक्तश्च, कलासेनश्च कर्मजित्।।१।।

प्रबुद्धश्च प्रव्रजितः, सुधर्माख्यो जिनेश्वरः।
तमोदीपो व्रजो बुद्धः, प्रबंधोऽतीतनामभृत्।।२।।

प्रमुखश्च पल्योपमोऽ-प्यकोपो निष्ठितो जिनः।
मृगनाभिश्च देवेन्द्रः, पदस्थः शिवनायकः।।३।।

विश्वचन्द्र, कपिलश्च, वृषभप्रियतेजसौ।
प्रशमो विषमांगश्च, चारित्रोऽथ प्रभारविः।।४।।

मुंजकेशो वीतवासाः, सुराधीशो दयेश्वरः।
सहस्रदोर्जिनसिंहो, रैवतनाथबाहुकौ।।५।।

श्रीमाल्ययोगनामा चा-योगीशमदनार्यपि।
आरंभो नेमिनाथश्च, गर्भज्ञातिश्चैकार्जितः।।६।।

रक्तकेशश्चक्रहस्तः, कृतेशः परमेश्वरः।
सुभूतिर्मुक्तिकांतश्च, निकेशिश्च प्रशस्तकः।।७।।

निराहारस्तथामूर्तो, द्विजनाथः श्रेयोगतः।
अरुजो देवनाथोऽपि, दयाधिकः पुष्पेश्वरः।।८।।

नृनाथः प्रीतभूतश्च, नागेन्द्रोऽथ तपोऽधिकः।
दशास्यारण्यकौ नाथौ, दशानीकश्च सात्त्विकः।।९।।

पश्चिमधातकीखंडे, भरतेषूद्भवान् जिनान्।
भक्त्या त्रिकालजान् नौमि, मे स्युः त्रिभुवनश्रियै।।१०।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

(५)

पश्चिम धातकीखण्ड द्वीप भरत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

श्री वृषभनाथ प्रियमित्र शांति, जिनवर सुमती श्री आदिनाथ।
अतिव्यक्त कलासेनाख्य कर्मजित् श्रीप्रबुद्ध प्रव्रजित नाथ।।
सूधर्म जिनेश्वर तमोदीप, व्रज बुद्ध प्रबंध अतीत प्रमुख।
पल्योपम औ अकोप निष्ठित, मृगनाभि औ देवेन्द्र स्वमुख।।१।।

श्रीजिन पदस्थ शिवनाथ कहे, ये भूतकाल के तीर्थंकर।
पश्चिमधातकि भरतोद्भव ये, भव-भव में होवें मंगलकर।।
श्री विश्वचंद्र कपिलाख्य वृषभ, प्रियतेज प्रशम विषमांगनाथ।
चारित्र प्रभादित्याख्य तथा, श्री मुंजकेश जिन वीतवास।।२।।

देवाधिप दयानाथ जिनवर, श्री सहस्रभुज जिनसिंह देव।
रैवतपति बाहु श्रीमाली रु अयोग अयोगीनाथ देव।।
श्री कामरिपू आरंभ नेमिजिन गर्भज्ञाति एकार्जित हैं।
ये वर्तमान तीर्थंकर सब, सुर असुर मनुजगण अर्चित हैं।।३।।

श्री रक्तकेश जिन चक्रहस्त, कृतनाथ सु परमेश्वर जिनवर।
सुमूर्ति मुक्तिकांताख्य निकेशी प्रशस्त निराहार जिनवर।।
श्रीमन् अमूर्त द्विजनाथ श्रेयगत अरुज देवनाथाख्य कहे।
सुदयाधिक पुष्पनाथ जिनवर, नरनाथ प्रतिभूताख्य कहें।।४।।

नागेन्द्र तपोधिक दशआनन, अरण्यक नाथ जिनेश्वर हैं।
दर्शनिक सु सात्विक तीर्थंकर, जिन चौबिस ये प्रीतिंकर हैं।।
पश्चिमधातकि में भरत क्षेत्र, इस जंबूद्वीप भरत सम हैं।
उनके जिन भूत भवद्भावी, उनको मम शिरसा वंदन है।।५।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतु-र्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(६)

पश्चिम धातकीखण्ड द्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

सुमेरुश्च जिनकृतः कैटभश्च प्रशस्तदः।
निर्दमनः कुलंकरो, वर्धमानामृतेंद्वपि।।१।।
संख्यानंदः कल्पकृतः, हरीशो बहुनायकः।
भार्गवो भद्रस्वामी च, पविपाणिर्विपोषितः।।२।।
ब्रह्मचार्यप्यसाक्षिकः, चारित्रेट् पारिणामिकः।
शाश्वतो निधिनाथश्च, कौशिको धर्मनायकः।।३।।
साधितो जिनस्वामी च, स्तमितेंद्रोऽत्यानंदकः।
पुष्पोत्फुल्लो मंडितश्च, प्रहतः कामसिद्धकः।।४।।
हसदिन्द्रश्चन्द्रपार्श्वोऽब्जबोधो जिनवल्लभः।
सुविभूतिः ककुद्भासः, सुवर्णो हरिवासकः।।५।।
प्रियमित्रो धर्मदेवः, प्रियरतो नंदीश्वरः।
अश्वानिकः पर्वनाथः, पार्श्वः चित्रमना अपि।।६।।
रवीन्द्रः, सौकुमारश्च, पृथ्वीवान् कुलरत्नकः।
धर्मनाथस्तथा सोमः, वरुणश्चाभिनंदनः।।७।।
सर्वनाथः सुदृष्टिश्च, शिष्टदेवो जिनेश्वरः।
सुधन्यः सोमचंद्रश्च, क्षेत्रनाथः सदंतिकः।।८।।
जयंतश्च तमःशत्रुः, निर्मितः कृतपार्श्वराट्।
बोधिलाभो बहुनंदः, सुदृष्टीशो जिनेश्वरः।।९।।
कुंकुमनाभिवक्षेशावमीरैरावतोद्भवाः।
धातक्यां त्रयकालीना, जिना नित्यमवंतुमां।।१०।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

(६)

पश्चिम धातकीखण्ड द्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

श्रीमन् सुमेरु जिनकृत कैटभ जिन प्रशस्तदायक तीर्थंकर।
निर्दमन व कुलकर वर्धमान, अमृतेन्दु संख्यानंद प्रवर।।
श्रीकल्पकृतं हरिनाथ बहुस्वामी भार्गव भद्रेश कहे।
पविपाणि विपोषित ब्रह्मचारि, असाक्षिक चारित्रेश रहें।।१।।

श्री परिणामिक शाश्वत् निधिपति कौशिक धर्मेश जिनेश कहे।
ऐरावत के ये तीर्थंकर, वंदत मम क्लेश अशेष दहें।।
साधित जिनस्वामी स्तमितेंद्र, अत्यानंद पुष्पोत्फुल्लनाथ।
मंडित प्रहताख्य सु मदनसिद्ध हसदिंद्र चंद्रपारिश्वनाथ।।२।।

श्री अब्जबोध जिनबल्लभ औ, सुविभूतिक ककुद्भास जिनवर।
सुवरण हरिवासक प्रीयमित्र, श्री धर्मदेव प्रियरत जिनवर।।
श्री नंदिनाथ अश्वानिक औ, श्रीपर्वनाथ पारसनाथा।
श्रीचित्रहृदय ये चौबिस जिन, नित नमन करूँ नाऊँ माथा।।३।।

श्रीमन् रवीन्दु जिन सौकुमार, पृथ्वीवन् श्री कुलरत्ननाथ।
श्री धर्मनाथ सोमाख्य वरुण, अभिनंदन जिनवर सर्वनाथ।।
सुदृष्टि शिष्ट सूधन्य नाम, श्रीसोमचंद्र श्रीक्षेत्रनाथ।
सदतिक जयंत औ तमोरिपू, निर्मित प्रभु श्रीकृतपार्श्वनाथ।।४।।

श्री बोधिलाभ बहुनंदप्रभू, सूदृष्टिस्वामि कुंकुमनाभी।
वक्षेश जिनेश्वर ये सब हैं, ऐरावत तीर्थंकर भावी।।
ये पश्चिम धात्री खंडद्वीप, ऐरावत के सब तीर्थंकर।
त्रयकालिक को मैं नित्य नमूँ, पाऊं उत्तमगति सौख्यंकर।।५।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

(७)

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप भरत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

दमनेंद्रो मूर्तिस्वामी, विरागेशः प्रलंबकः।
पृथ्वीशोचारित्रनिधि-रपराजितनामभाक्।।१।।
सुबोधकश्च बुद्धीशः, वैतालिकः त्रिमुष्टिराट्।
मुनिबोधस्तीर्थनाथः, धर्माधीशो धराधिपः।।२।।
प्रभवोऽनादिश्चानादि-प्रभुश्च सर्वतीर्थकः।
निरुपमः कौमारिकः, विहारगृहनामभाक्।।३।।
धरणीश्वरो विकासश्चे-त्यमीः प्राक्पुष्करोद्भवाः।
भूतकालजिनाः मह्यं, दिश्युर्मुक्तिश्रियं त्वरं।।४।।
जगन्नाथः प्रभासेशः, स्वरेशो भरतेश्वरः।
दीर्घाननश्च विख्यातोऽ-वसानिश्च प्रबोधराट्।।५।।
तपोनाथः पावकश्च, त्रिपुरेश्वरसौगतौ।
वासवश्च मनोहृच्च, शुभकर्मेश्वरो जिनः।।६।।
इष्टसेवित विमलेन्द्रौ, धर्मांशुकः प्रसादभाक्।
प्रभामृगांकश्चोज्झित-कलंको तीर्थकृज्जिनः।।७।।
स्फटिकप्रभनामा च, गजेन्द्रोपि ध्यानजयः।
पुष्करार्धे भरतस्य, जाता मे संतु शांतये।।८।।
श्री वसंतध्वजो देवो, त्रिजयंतो जिनेश्वरः।
त्रिस्तंभश्च परब्रह्मा, चाबालिशः प्रवाद्यपि।।९।।
भूमानंदस्त्रिनयनो, विद्वान् नामधेयकः।
परमात्मप्रसंगश्च, सुभूमीन्द्रो गोस्वाम्यपि।।१०।।
कल्याणप्रकाशिताख्यो, मंडलश्च महावसुः।
उदयवान् दिव्यज्योतिः, प्रबोधेशोऽभयांकभाक्।।११।।
प्रमितो दिव्यस्फारको, व्रतस्वामी निधानकः।
त्रिकर्मा चेत्यमीः पांतु, मां त्रिकालोद्भवा जिनाः।।१२।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(७)

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप भरत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

दमनेन्द्र मूर्तिस्वामी विराग, स्वामी प्रलंब पृथ्वीपति हैं।
चारित्रनिधी अपराजित औ, सूबोधक बुद्धीश्वर प्रभु हैं।।
वैतालिकजिन त्रिमुष्टिनाथ, मुनिबोध तीर्थस्वामी जानो।
श्री धर्मधीश धरणेश प्रभव, सुअनादि अनादिप्रभू मानो।।१।।

श्री सर्वतीर्थ निरुपम जिनवर, कौमारिकजिन श्रीविहारगृह।
धरणीश्वर और विकासप्रभू, ये भूतकाल जिनवर सुखगृह।।
श्री जगन्नाथ सु प्रभासनाथ, स्वरस्वामी औ भरतेश विभो।
दीर्घानन औ विख्यातनाथ, अवसानि प्रबोधसुनाथ प्रभो।।२।।

श्री तपोनाथ पावकजिनवर, त्रिपुरेश्वर सौगत वासव हैं।
जिनदेव मनोहर शुभकर्मेश्वर इष्टसेवित विमलेन्द्र कहें।।
श्रीधर्मवास सु प्रसादनाथ तीर्थंकर प्रभामृगांक कहे।
उज्झितकलंक स्फटिकप्रभ गजइन्द्र ध्यानजय नाम रहें।।३।।

श्री बसंतध्वज त्रिजयंत और त्रिस्तम्भ परंब्रह्माख्य कहे।
श्री अबालिशनाथ प्रवादि औ भूमानंद त्रिनयन नाम कहें।।
विद्वान सु परमात्मप्रसंग, भूमीन्द्र तथा गोस्वामी जिन।
कल्याणप्रकाशित मंडलजिन सु महावसु उदयवान् स्वामिन्।।४।।

श्री दिव्यज्योति औ प्रबोधेश, अभयांक प्रमित दिव्यस्फारक हैं।
व्रतस्वामी और निधाननाम, त्रिकर्मजिनेश अनागत हैं।।
ये पूरब पुष्करअर्ध द्वीप, में भरत क्षेत्र के तीर्थंकर।
इन भूत भवद् भावी जिन को, मेरा नित वंदन अंजलि कर।।५।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

(८)

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

कृतिनाथ उपविष्टः, श्रीदेवादित्यास्थानिकौ।
प्रचन्द्रोवेषिकाख्यश्च, त्रिभानुर्ब्रह्मनामभाक्।।१।।

वज्रांगश्चाविरोधिश्चा-पापो लोकोत्तरो जिनः।
जलधिशेषो विद्योतः, सुमेरुश्च विभावितः।।२।।

वत्सलो जिनालयाख्यः, तुषारो भुवनेश्वरः।
सुकामो देवाधिदेवो-प्याकारिमश्च बिंबितः।।३।।

शंकराख्योऽक्षवासश्च, सुनग्नेशो नग्नाधिपः।
नष्टपाषंडनामाच, स्वप्नवेदस्तपोधनः।।४।।

पुष्पकेतुर्धार्मिकश्च, चन्द्रध्वजोऽनुरक्तत्विट्।
वीतराग उद्योतश्च, तमोपेक्षाह्वयो जिनः।।५।।

मधुनादो मरुदेवो, दमाख्यो वृषभेश्वरः।
शिलातनो विश्वनाथो, महेन्द्रो नंदतीर्थराट्।।६।।

तमोहरो ब्रह्मजश्च, सन्तः प्राक्पुष्करोद्भवाः।
यशोधरः सुकृताख्योऽभयघोषो निर्वाणकः।।७।।

व्रतवासोऽतिराजश्चाप्यश्वनाथोऽर्जुनो जिनः।
तपश्चन्द्रः शारीरिको, महेशश्च सुग्रीवकः।।८।।

दृढप्रहारोंऽबरिको, दयातीतश्च तुंबरः।
सर्वशीलः प्रतिजातो, जितेन्द्रियस्तपोरविः।।९।।

रत्नाकरश्च देवेशो, लांछनः सुप्रदेशकः।
ऐरावतोद्भवाः पांतु, त्रैकालिकजिनाश्च मां।।१०।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

(८)

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

श्रीकृतीनाथ उपविष्ट तथा देवादित्य आस्थानिक प्रचंद्र।
वेषिक त्रिभानु श्री ब्रह्मनाथ, वज्रांग सु अविरोधी जिनंद।।
श्री अपाप लोकोत्तर जलधीशेषाख्य और विद्योत कहें।
सूमेरु विभावित वत्सलजिन, सु जिनालय नाथ तुषार कहें।।१।।

श्री भुवनस्वामि सूकामनाथ, देवाधिदेव आकारिम हैं।
श्री बिंबित जिन ये चौबीसों, कहलाते अतीत कालिक हैं।।
श्री शंकर अक्षवास नग्नं, नग्नाधिपति ये नाम धरें।
जिनदेव नष्टपाखंड स्वप्न-वेदाख्य तपोधन पुण्य भरें।।२।।

श्री पुष्पकेतु धार्मिक चंद्राकेतू अनुरक्तज्योति जिनवर।
श्री वीतराग उद्योत तमोपेक्षक मधुनाद सुतीर्थंकर।।
मरुदेव दमाख्य वृषभस्वामी, जिन शिलातनाधिप विश्वनाथ।
जिनवर महेन्द्र नंदाख्य तमोहर ब्रह्मज ये तीर्थाधिनाथ।।३।।

श्रीमान यशोधर सुकृत जिन, औ अभयघोष निर्वाणप्रभू।
व्रतवास तथा अतिराज अश्व-जिन अर्जुन सु तपश्चंद्र विभू।।
शारीरिक महेश सुग्रीव दृढ़प्रहार जिनअंबरिक प्रभु हैं।
श्रीदयातीत तुंबुर भगवन् श्रीसर्वशील प्रतिजात कहें।।४।।

जीतेन्द्रिय तपादित्य रत्नाकर, देवेश्वर लांछन् जिनवर।
श्री सुप्रदेश ये चौबीसों, भावी तीर्थंकर हैं सुखकर।।
इस पूरब पुष्करार्ध में जो, ऐरावत क्षेत्र कहा जाता।
उसके त्रैकालिक जिनवर को, वंदन करते हो सुख साता।।५।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

(९)

पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप भरत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

पद्मचन्द्रश्च रत्नांगोऽ-योगिकेशः सर्वार्थकः।
कृषिनाथो हरिभद्रो, गुणाधिपः पारित्रिकः।।१।।
ब्रह्मनाथो मुनींद्रश्च, श्रीदीपकः राजर्षिभाक्।
विशाखोऽनिंदिताख्योपि, रवीशः सोमदत्तकः।।२।।
जयस्वामी मोक्षनाथो-ऽग्रभासो धनुःसंगकः।
रोमांचिको मुक्तिनाथः, प्रसिद्धाख्यो जितेश्वरः।।३।।
सर्वांगस्वामी तीर्थेशः, पद्माकरः प्रभाकरः।
बलनाथश्च योगीशः, सूक्ष्मांगाख्यो व्रताचलः।।४।।
कलंबकः परित्यागो, निषेधिको जिनेश्वरः।
पापापहारी सुस्वामी, मुक्तिचंद्रोऽप्यप्राशिकः।।५।।
जयचंद्रो मलाधारी, तीर्थकर्ता सुसंयत।
मलयसिंध्वक्षधरौ, देवधरो देवगणः।।६।।
आगामिको विनीतश्च, रतानंदः सन्त्यमीः।
प्रभावको विनतेंद्रः सुभाविको दिवाकरः।।७।।
अगस्त्येजाः धनदत्तः, पौरवो जिनदत्तकः।
पार्श्वनाथो मुनिसिंधु-रास्तिकाख्यो जिनेश्वरः।।८।।
भवानीको नृपनाथो, नारायणः शमास्पदः।
भूपतिश्च सुदृष्टिश्च, भवभीरुजिनेश्वरः।।९।।
नंदनो भार्गवाख्योपि, सुवसुश्च परावशः।
वनवासीकनामापि, भरतेशो जिना इमे।।१०।।
पुष्करार्धेऽपरे जाता-स्तीर्थेशा भरतोद्भवाः।
पांतु मां त्रयकालीनास्तेभ्यो नित्यं नमोऽस्तु मे।।११।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

(९)

पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप भरत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

श्रीपद्मचंद्र रत्नांग तथा, सु अयोगिकेश सर्वार्थप्रभो।
कृषिनाथ और हरिभद्र गुणाधिप पारत्रिक ब्रह्मेश विभो।।
श्री मुनीन्द्र दीपक राजर्षी, सु विशाख अनिंदित रविस्वामी।
श्री सोमदत्त जयस्वामी औ, मोक्षाधिप अग्रभास नामी।।१।।

श्री धनुःसंग रोमांचक औ, श्रीमुक्तिनाथ शिवसौख्य भरें।
जिनराज प्रसिद्ध जितेश नाम, ये तीर्थंकर भवदुःख हरें।।
सर्वांगस्वामि पद्माकर औ, जिन प्रभाकरं बलनाथ प्रभो।
योगीश्वर श्रीसूक्ष्मांगदेव, व्रतचलातीत सु कलंबक भो।।२।।

परित्याग निषेधिक पापापहारी सुस्वामी मुक्तिचंद्र।
अप्राशिक श्रीजयचंद्र मलाधारी सूसंयत मलयसिन्धु।।
जिनराज अक्षधर देवधरं, जिनदेवगणी आगमिक नाथ।
जिनवर विनीत औ रतानंद, इन संप्रति जिन को नमूं आज।।३।।

जिनराज प्रभावक विनतेन्द्रं सूभावक दिनकर अगस्त्येज।
धनदत्त सुपौरव जिनदत्त रु, श्रीपार्श्वनाथ जिनसौख्य हेतु।।
मुनिसिंधू आस्तिक भवानीक, नृपनाथ सु नारायण जिनवर।
प्रशमीक भूपती सुदृष्टी, भवभीरुभ्रमहर तीर्थंकर।।४।।

नंदन भार्गव जिन सुवसू हैं, जिनदेव परावश वनवासिक।
भरतेश जिनेश्वर ये चौबिस, भावी तीर्थंकर सुख शासित।।
पश्चिम पुष्करवर अर्धद्वीप, में भरत क्षेत्र के तीर्थंकर।
उन भूत भवद् भावी सबको, वंदूं मैं शिरसा अंजलि कर।।५।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

(१०)

पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

उपशांतो फाल्गुनाख्यो, पूर्वाशाख्यः सुधर्मिकः
गौरिकः त्रिविक्रमश्च, नरसिंहो मृगवसुः।।१।।
सोमेश्वरः सुधादेवोऽ-पापमल्लो विबाधकः।
श्रीसंधिकोऽपि मांधाता-ऽश्वतेजाश्च विद्याधरः।।२।।
सुलोचनो मौननिधिः, पुंडरीकश्चित्रगणः।
मणीन्द्रः सर्वकालश्च, भूरिश्रवाः पुण्यांगधृत्।।३।।
श्रीमान् गांगेयकस्वामी, नल्लवासवभीमकौ।
दयानिधिः सुभद्रश्च, स्वामी च हनिकजिनः।।४।।
नंदिघोषो रूपबीजो, वज्रनाभिर्जिनेश्वरः।
संतोषश्च सुधर्मा च, फणीशो वीरचंद्रमाः।।५।।
मेधानिकोपि स्वच्छाख्यः कोपक्षयाह्वयो जिनः।
अकामो धर्मधामा च, सूक्तिसेनश्च तीर्थराट्।।६।।
क्षेमांगोपि दयानाथः, कीर्तिपश्च शुभाह्वयः।
ऐरावतोद्भवाः एते, जिना रक्षंतु मां सदा।।७।।
अदोषिको वृषभेशो, विनयानंदनामकः।
मुनिभारततीर्थेशः, इंद्रकाख्यो जिनाधिपः।।८।।
चंद्रकेतुर्ध्वजादित्यः, वसुबोधो मुक्तिगतः।
धर्मबोधश्च देवांगः, माराचिकः सुजीवनः।।९।।
यशोधरो गौतमश्च, मुनिशुद्धः प्रबोधिकः।
सदानीकोपि चारित्र-नाथश्च शतानंदनः।।१०।।
वेदार्थश्च सुधानीको, ज्योतिर्मुखः सुरार्घ्यकः।
पश्चिमपुष्कार्धैरा-वतोद्भूता अवंतु मां।।११।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

(१०)

पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप ऐरावत क्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

उपशांत सु फाल्गुन पूर्वांस, सौधर्म रु गौरिक श्रीविक्रम।
नरसिंह सु मृगवसु सोमेश्वर, व सुधासुर जिनवर को प्रणमन।।
अपापमल्ल सु विबाधनाम, संधिक मांधाता अश्वतेज।
विद्याधर सूलोचन रु मौननिधि पुंडरीक जिन सौख्य हेतु।।१।।

जिनराज चित्रगण मणीइन्द्र श्रीसर्वकाल भूरिश्रवणं।
पुण्यांग नाम ये तीर्थंकर, चौबीसों होवें दुखहरणं।।
गांगेयक नलवासव सु भीम, जिन दयानिधि व सुभद्रनाथ।
स्वामी श्री हनिक व नंदिघोष जिन रूपबीज औ वज्रनाभ।।२।।

संतोष सुधर्म फणीश्वर औ, श्री वीरचंद्र मेधानिक हैं।
श्रीस्वच्छ कोपक्षय जिन अकाम, श्री धर्मधाम भवनाविक हैं।।
श्री सूक्तिसेन क्षेमांग प्रभू, श्रीदयानाथ कीर्तिपथ जानो।
जिनदेव शुभंकर चरण कमल का, ध्यान करो भवभय हानो।।३।।

जिनराज अदोषिक वृषभ और, विनयानंद मुनिभारत इन्द्रक।
श्री चंद्रकेतु औ ध्वजादित्य, वसुबोध मुक्तिगत आनंदक।।
श्री धर्मबोध देवांग तथा, मारीचिक और सुजीवन हैं।
जिनदेव यशोधर गौतम औ मुनिशुद्ध प्रबोधिक धीधन हैं।।४।।

श्री सदानीक चारित्रनाथ और शतानंद वेदार्थ प्रभो।
श्रीसुधानीक ज्योतिर्मुख औ, जिनवर सुराघ्र्य त्रैलोक्यविभो।।
पुष्करवर अर्ध अपर में है, ऐरावत क्षेत्र महान अहो।
उनके ये त्रैकालिक जिनवर, मेरे सब कर्मकलंक दहो।।५।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

इष्टप्रार्थना

धर्मतीर्थस्य कर्तृणां, स्तुत्वा नामानि भक्तितः।
पुनः पुनः नमस्यामि, तांस्तान् सर्वान् जिनान् मुदा।।१।।

स्मरामि च पुनर्नित्यं, आश्रयामि भजाम्यपि।
आराधयामि भक्त्याहं, वंदे पुनः पुनः स्तुवे।।२।।

पंचसंसार-निर्मुक्तान्, पंचमीगतिमाश्रितान्।
पंचमज्ञानसंपन्नान्, पंचकल्याणनायकान्।।३।।

पंचाजवंजवान्मुक्त्यै, पंचांगेन नमाम्यहं।
पंचमज्ञानसंसिद्धयै, पंचमीगतिलब्धये।।४।।

यावदीदृगवस्था मे, न स्यात्तावत् जिनेश्वराः।
युष्मत्पादकमलानि, तिष्ठंतु मे मनोम्बुजे।।५।।

रंरम्येत मनोऽपि मे, युष्मद् पादाम्बुजेष्विति।
यथा तथा च स्वप्नेऽपि, गच्छेदन्यत्र न क्वचित्।।६।।

एतां स्तुतिं पठेत् यौऽसौ, सर्वकल्याणभाक् पुनः।
पंचकल्याणमप्याप्य, धर्मतीर्थाधिपो भवेत्।।७।।

अनंतानंतकालं सः, परमानंदसद्मनि।
केवलज्ञानमत्यामा, लक्ष्म्या नित्यं सुखी वसेत्।।८।।

प्रशस्तिः

त्रिशून्यपंचद्वयंकेऽस्मिन्, वीराब्दे हस्तिनापुरे।
माघशुक्लाचतुर्दश्यां, नामस्तोत्रं प्रपूर्यते।।१।।

येषां भक्त्या मया स्तोत्रं, कृतं तेषाममुत्र वै।
साक्षाद् हि दर्शनं भूयात्, इत्थं याञ्चां करोम्यहं।।२।।

यावत् श्रीजैनधर्मोऽयं, स्थेयात् भव्यहितंकरः।
तावन्नंद्यात् कृतिश्चेयं, दद्यात् ज्ञानमतिं श्रियम्।।३।।

इष्टप्रार्थना

इन धर्मतीर्थ कर्ताओं की भक्ती से नामावलि पढ़ के।
मैं पुनः पुनः उन सब जिनवर को नमूं हर्ष मन में धर के।।
पुनरपि नितप्रति स्मरण करूँ, आश्रय लेऊँ संस्तवन करूँ।
भक्ती से आराधूं पुनरपि, प्रणमन वंदन औ नमन करूँ।।१।।

जो पांच परावृत मुक्त हुये, पंचम गति को भी प्राप्त हुये।
औ पंचम ज्ञान सहित पाँचों-कल्याणक के भी नाथ हुये।।
मैं पांच परावृत मुक्ति हेतु, पंचम वर ज्ञान के पाने को।
औ पंचम सिद्धगती हेतू, पंचांग नमूं नितप्रति उनको।।२।।

जब तक शिवगती न हो मेरी, तब तक मेरे मन अंबुज में।
हे प्रभो! आपके चरण कमल, नित तिष्ठें यही आश चित में।।
मेरा मन भी बस आप पाद-कमलों में अतिशय रमा रहे।
इस विध कि स्वप्न में भी अन्यत्र, कहिं जाने से बस बचा रहे।।३।।

इस विध जो यह संस्तुति पढ़ते, वे सर्व कल्याणों को पाते।
पुनरपि पांचों कल्याण पाय, वृष तीर्थाधिप भी बन जाते।।
वे काल अनंतानंतों तक, परमानंदालय में जाके।
निज केवल 'ज्ञानमती' लक्ष्मी, के साथ रहें नित सुख पाके।।४।।

प्रशस्ति

-दोहा-

वीर अब्द पच्चीस सौ, तीन माघ सुदि श्रेष्ठ।
चौदश तिथि में तीर्थ वर, हस्तिनागपुर क्षेत्र।।१।।

'ज्ञानमती' मैं आर्यिका, पूर्ण किया स्तव पद्म।
जैनधर्म जब तक रहे, पूरे सब कर्त्तव्य।।२।।

त्रयकालिक के तीस ये, चौबीसी मुनिवंद्य।
उनकी नाम स्तुति कही, हो जग में अभिनंद्य।।३।।

तीस चौबीसी मंत्र

मंगलाचरण

दोहा

ढाई द्वीप में पण भरत, ऐरावत भी पंच।
इनमें तीनों काल के, तीर्थंकर भगवंत।।१।।
इन चौबीसी तीस के, सात शतक अरु बीस।
नाम मंत्र उनके जपूँ, नमूँ नमाकर शीश।।२।।

(१)

जंबूद्वीप भरतक्षेत्र के भूतकालीन चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री निर्वाणजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री सागरजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री महासाधुजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री विमलप्रभजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री श्रीधरजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री सुदत्तजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री अमलप्रभजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री उद्धरजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री अंगिरजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री सन्मतिजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री सिंधुजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री कुसुमाँजलिजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री शिवगणजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री उत्साहजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री ज्ञानेश्वरजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री परमेश्वरजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री विमलेश्वरजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री यशोधरजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री कृष्णजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमतिजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री शुद्धमतिजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री भद्रजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री अतिक्रांतजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री शांतजिनेन्द्राय नमः।

(२)

जंबूद्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री वृषभजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री संभवजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री सुमतिजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।

९. ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री शीतलजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री श्रेयोजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री विमलजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः।

(३)

जंबूद्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के भविष्यत्कालीन चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री महापद्मजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री सुरदेवजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री सर्वात्मभूतजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री देवपुत्रजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री कुलपुत्रजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री उदंकजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री प्रौष्ठिलजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री जयकीर्तिजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री निष्पापजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री निष्कषायजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री विपुलजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री निर्मलजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री चित्रगुप्तजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री समाधिगुप्तजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री स्वयंभूजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री अनिवर्तकजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री जयनाथजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री विमलजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री देवपालजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यजिनेन्द्राय नमः।

(४)

जंबूद्वीप संबंधी ऐरावतक्षेत्र के भूतकालीन चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री पंचरूपजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री जिनधरजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री सांप्रतिकजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री ऊर्जयंतजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री आधिक्षायिकजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री रत्नसेनजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री रामेश्वरजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री अनंगोज्झितजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री विन्यासजिनेन्द्राय नमः।

११. ॐ ह्रीं श्री अशेषजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री सुविधानजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री प्रदत्तजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री कुमारजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री सर्वशैलजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री प्रभंजनजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री सौभाग्यनाथजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री व्रतविंदुजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री सिद्धकरजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री ज्ञानशरीरजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री कल्पद्रुमजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री तीर्थफलेशजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री दिनकरजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री वीरप्रभजिनेन्द्राय नमः।

(५)

जंबूद्वीप संबंधी ऐरावतक्षेत्र के वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री बालचंद्रजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री सुव्रतजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री अग्निसेनजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री नंदिसेनजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री श्रीदत्तजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री व्रतधरजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री सोमचन्द्रजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री धृतदीर्घजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री शतायुष्यजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री विवसितजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री श्रेयोजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री विश्रुतजलजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री सिंहसेनजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री उपशांतजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री गुप्तशासनजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री अभिधानजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री मरुदेवजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री श्रीधरजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री शामकंठजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री अग्निप्रभजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री अग्निदत्तजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री वीरसेनजिनेन्द्राय नमः।

(६)

जंबूद्वीप संबंधी ऐरावतक्षेत्र के भविष्यत्कालीन चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्रीसिद्धार्थजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री विमलजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री जयघोषजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री नंदिसेनजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री स्वर्गमंगलजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री वज्राधारीजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री निर्वाणजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री धर्मध्वजजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री सिद्धसेनजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री महासेनजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री रविमित्रजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री सत्यसेनजिनेन्द्राय नमः।

१३. ॐ ह्रीं श्री चंद्रनाथजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री महीचंद्रजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री श्रुतांजनजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री देवसेनजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री सुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री जिनेंद्रनाथजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री सुकौशलजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री विमलजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री अमृतसेनजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री अग्निदत्तजिनेन्द्राय नमः।

(७)

पूर्वधातकीखंड संबंधी भरतक्षेत्र के भूतकालीन चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री रत्नप्रभजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री अमितनाथजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री संभवनाथजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री अकलंकजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री चंद्रस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री शुभंकरजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री तत्त्वनाथजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री सुंदरस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री पुरंधरजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री स्वामिदेवजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री देवदत्तजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री वासवदत्तजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री श्रेयोनाथजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री विश्वरूपजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री तपस्तेजोजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री श्रीपतिबोधदेवजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री सिद्धार्थदेवजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री संयमजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री विमलजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री देवेन्द्रजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री प्रवरनाथजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री विश्वसेनजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री मेघनंदिजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री त्रिजेतृकजिनेन्द्राय नमः।

(८)

पूर्वधातकीखंड संबंधी भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री युगादिदेवजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री सिद्धांतजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री महेशनाथजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री परमार्थनाथजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री समुद्धरजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री भूधरनाथजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री उद्योतजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री आर्जवजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री अभयनाथजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री अप्रकंपजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री पद्मनाथजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री पद्मनंदिजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री प्रियंकरजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री सुकृतनाथजिनेन्द्राय नमः।

१५. ॐ ह्रीं श्री भद्रनाथजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री मुनिचंद्रजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री पंचमुष्टिजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री त्रिमुष्टिजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री गांगिकनाथजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री गणनाथजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री सर्वांगदेवजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मेंद्रनाथजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री इन्द्रदत्तजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री नायकनाथजिनेन्द्राय नमः।

(९)

पूर्वधातकीखंड संबंधी भरतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री श्रीसिद्धार्थजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री सम्यग्गुणजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्रदेवजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री संपन्ननाथजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री सर्वस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री मुनिनाथजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री विशिष्टदेवजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री अमरनाथजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मशांतिजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री पर्वनाथजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री अकामुकदेवजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री ध्याननाथजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री कल्पजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री संवरनाथजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री स्वास्थ्यनाथजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री आनंदनाथजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री रविप्रभजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री सुनंदजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री सुकर्णदेवजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री सुकर्मदेवजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री अममदेवजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री शाश्वतनाथजिनेन्द्राय नमः।

(१०)

पूर्वधातकीखंड संबंधी ऐरावतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री वज्रस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री उदत्तजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री सूर्यस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री पुरुषोत्तमजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री शरणस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री अवबोधजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री विक्रमजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री निर्घंटिकजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री हरीन्द्रजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री परित्रेरितजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री निर्वाणसूरिजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री धर्महेतुजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री चतुर्मुखजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री सुकृतेंद्रजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री श्रुताम्बुजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री विमलार्कजिनेन्द्राय नमः।

१७. ॐ ह्रीं श्री देवप्रभजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री धरणेंद्रजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री सुतीर्थनाथजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री उदयानंदजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री सर्वार्थदेवजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री धार्मिकजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री क्षेत्रस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री हरिचंद्रजिनेन्द्राय नमः।

(११)

पूर्वधातकीखंड संबंधी ऐरावतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री अपश्चिमजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री अर्हदेवजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री चरित्रनाथजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री सिद्धानंदजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री नंदगजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री पद्मकूपजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री उदयनाभिजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री रुकमेंदुजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री कृपालुजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री प्रौष्ठिलजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री सिद्धेश्वरजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री अमृतेन्दुजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री स्वामिनाथजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री भुवनलिंगजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री सर्वरथजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री मेघनंदजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री नंदिकेशजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री हरिनाथजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री अधिष्ठजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री शांतिकदेवजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री नंदीस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री कुंदपार्श्वजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री विरोचनजिनेन्द्राय नमः।

(१२)

पूर्वधातकीखंड संबंधी ऐरावतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री प्रवरवीरजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री विजयप्रभजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री सत्पदजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री महामृगेंद्रजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री चिंतामणिजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री अशोकिजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री द्विमृगेन्द्रजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री उपवासिकजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री पद्मचंद्रजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री बोधकेंदुजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री चिताहिमजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री उत्साहिकजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री अपाशिवजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री देवजलजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री नारिकजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री अनघजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री नागेंद्रजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री नीलोत्पलजिनेन्द्राय नमः।

१९. ॐ ह्रीं श्री अप्रकंपजिनेन्द्राय नमः। २०. ॐ ह्रीं श्री पुरोहितजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री भिंदकनाथजिनेन्द्राय नमः। २२. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री निर्वाचजिनेन्द्राय नमः। २४. ॐ ह्रीं श्री विरोषिकजिनेन्द्राय नमः।

(१३)

पश्चिमधातकीखंड संबंधी ऐरावतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय नमः। २. ॐ ह्रीं श्री प्रियमित्रजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय नमः। ४. ॐ ह्रीं श्री सुमितनाथजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नमः। ६. ॐ ह्रीं श्री अतिव्यक्तजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री कलासेनजिनेन्द्राय नमः। ८. ॐ ह्रीं श्री कर्मजित्जिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री प्रबुद्धजिनेन्द्राय नमः। १०. ॐ ह्रीं श्री प्रव्रजितजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री सुधर्मजिनेन्द्राय नमः। १२. ॐ ह्रीं श्री तमोदीपजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री वज्रनाथजिनेन्द्राय नमः। १४. ॐ ह्रीं श्री बुद्धनाथजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री प्रबंधदेवजिनेन्द्राय नमः। १६. ॐ ह्रीं श्री अतीतनाथजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री प्रमुखजिनेन्द्राय नमः। १८. ॐ ह्रीं श्री पल्योपमजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री अकोपजिनेन्द्राय नमः। २०. ॐ ह्रीं श्री निष्ठितजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री मृगनाभिजिनेन्द्राय नमः। २२. ॐ ह्रीं श्री देवेन्द्रजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री पदस्थजिनेन्द्राय नमः। २४. ॐ ह्रीं श्री शिवनाथजिनेन्द्राय नमः।

(१४)

पश्चिमधातकीखंड संबंधी भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री विश्वचंद्रजिनेन्द्राय नमः। २. ॐ ह्रीं श्री कपिलजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवजिनेन्द्राय नमः। ४. ॐ ह्रीं श्री प्रियतेजोजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री प्रशमजिनेन्द्राय नमः। ६. ॐ ह्रीं श्री विषमाँगजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री चारित्रनाथजिनेन्द्राय नमः। ८. ॐ ह्रीं श्री प्रभादित्यजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री मुंजकेशजिनेन्द्राय नमः। १०. ॐ ह्रीं श्री वीतवासजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री सुराधिपजिनेन्द्राय नमः। १२. ॐ ह्रीं श्री दयानाथजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रभुजजिनेन्द्राय नमः। १४. ॐ ह्रीं श्री जिनसिंहजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री रैवतनाथजिनेन्द्राय नमः। १६. ॐ ह्रीं श्री बाहुस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री श्रीमालिजिनेन्द्राय नमः। १८. ॐ ह्रीं श्री अयोगदेवजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री अयोगिनाथजिनेन्द्राय नमः। २०. ॐ ह्रीं श्री कामरिपुजिनेन्द्राय नमः।

२१. ॐ ह्रीं श्री आरंभजिनेन्द्राय नमः। २२. ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री गर्भज्ञातिजिनेन्द्राय नमः। २४. ॐ ह्रीं श्री एकार्जितजिनेन्द्राय नमः।

(१५)

पश्चिमधातकीखंड संबंधी भरतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री रक्तकेशजिनेन्द्राय नमः। २. ॐ ह्रीं श्री चक्रहस्तजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री कृतनाथजिनेन्द्राय नमः। ४. ॐ ह्रीं श्री परमेश्वरजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री सुमूर्तिजिनेन्द्राय नमः। ६. ॐ ह्रीं श्री मुक्तिकांतजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री निकेशिजिनेन्द्राय नमः। ८. ॐ ह्रीं श्री प्रशस्तजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री निराहारजिनेन्द्राय नमः। १०. ॐ ह्रीं श्री अमूर्तजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री द्विजनाथजिनेन्द्राय नमः। १२. ॐ ह्रीं श्री श्रेयोगतजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री अरुजनाथजिनेन्द्राय नमः। १४. ॐ ह्रीं श्री देवनाथजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री दयाधिकजिनेन्द्राय नमः। १६. ॐ ह्रीं श्री पुष्पनाथजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री नरनाथजिनेन्द्राय नमः। १८. ॐ ह्रीं श्री प्रतिभूतजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री नागेन्द्रजिनेन्द्राय नमः। २०. ॐ ह्रीं श्री तपोधिकजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री दशाननजिनेन्द्राय नमः। २२. ॐ ह्रीं श्री आरण्यकजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री दशानीकजिनेन्द्राय नमः। २४. ॐ ह्रीं श्री सात्विकजिनेन्द्राय नमः।

(१६)

पश्चिमधातकीखंड संबंधी ऐरावतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री सुमेरुजिनेन्द्राय नमः। २. ॐ ह्रीं श्री जिनकृतजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री कैटभनाथजिनेन्द्राय नमः। ४. ॐ ह्रीं श्री प्रशस्तदायकजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री निर्दमनजिनेन्द्राय नमः। ६. ॐ ह्रीं श्री कुलकरजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री वर्धमानजिनेन्द्राय नमः। ८. ॐ ह्रीं श्री अमृतेंदुजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री संख्यानंदजिनेन्द्राय नमः। १०. ॐ ह्रीं श्री कल्पकृतजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री हरिनाथजिनेन्द्राय नमः। १२. ॐ ह्रीं श्री बहुस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री भार्गवजिनेन्द्राय नमः। १४. ॐ ह्रीं श्री भद्रस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री पविपाणिजिनेन्द्राय नमः। १६. ॐ ह्रीं श्री विपोषितजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मचारिजिनेन्द्राय नमः। १८. ॐ ह्रीं श्री असाक्षिकजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री चारित्रेशजिनेन्द्राय नमः। २०. ॐ ह्रीं श्री पारिणामिकजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री शाश्वतनाथजिनेन्द्राय नमः। २२. ॐ ह्रीं श्री निधिनाथजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री कौशिकजिनेन्द्राय नमः। २४. ॐ ह्रीं श्री धर्मेशजिनेन्द्राय नमः।

(१७)

पश्चिमधातकीखंड संबंधी ऐरावतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री साधितजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री जिनस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री स्तमितेन्द्रजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री अत्यानंदजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री पुष्पोत्फुल्लजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री मंडितजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री प्रहतदेवजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री मदनसिद्धजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री हसदिंद्रजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री चंद्रपार्श्वजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री अब्जबोधजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री जिनबल्लभजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री सुविभूतिकजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री ककुद्भासजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री सुवर्णनाथजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री हरिवासकजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री प्रियमित्रजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री धर्मदेवजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री प्रियरतजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री नंदिनाथजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री अश्वानीकजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री पर्वनाथजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री चित्रहृदयजिनेन्द्राय नमः।

(१८)

पश्चिमधातकीखंड संबंधी ऐरावतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री रवीन्दुजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री सौकुमारजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीवान्जिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्रीकुलरत्नजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री सोमनाथजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री वरुणजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री सर्वनाथजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री सुदृष्टिजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री शिष्टजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री सुधन्यजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री सोमचंद्रजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री क्षेत्राधीशजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री सदंतिकनाथजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री जयंतदेवजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री तमोरिपुजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री निर्मितदेवजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री कृतपार्श्वजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री बोधिलाभजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री बहुनंदजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री सुदृष्टिजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री कुंकुमनाभजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री वक्षेशजिनेन्द्राय नमः।

(१९)

पूर्वपुष्करार्ध द्वीपसंबंधी भरतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री दमनेंद्रजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री मूर्तस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री विरागस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री प्रलंबजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीपतिजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री चारित्रनिधिजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री अपराजितजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री सुबोधकजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री बुद्धीशजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री वैतालिकजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री त्रिमुष्टिनाथजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री मुनिबोधजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री तीर्थस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री धर्मधीशजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री धरणेशजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री प्रभवदेवजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री अनादिदेवजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री अनादिप्रभुजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री सर्वतीर्थनाथजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री निरुपमदेवजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री कौमारिकजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री विहारगृहजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री धरणीश्वरजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री विकासदेवजिनेन्द्राय नमः।

(२०)

पूर्वपुष्करार्ध संबंधी भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री जगन्नाथजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री प्रभासनाथजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री स्वरस्वामीजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री भरतेशजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री दीर्घाननजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री विख्यातकीर्तिजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री अवसानिजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री प्रबोधजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री तपोनाथजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री पावकजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री त्रिपुरेश्वरजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री सौगतजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री वासवजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री मनोहरजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री शुभकर्मईशजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री इष्टसेवितजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री विमलेंद्रजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री धर्मवासजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री प्रसादजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री प्रभामृगांकजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री उज्झितकलंकजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री स्फटिकप्रभजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री गजेन्द्रजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री ध्यानजयजिनेन्द्राय नमः।

(२१)

पूर्वपुष्करार्ध द्वीपसंबंधी भरतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री वसंतध्वजजिनेन्द्राय नमः। २. ॐ ह्रीं श्री त्रिजयंतजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री त्रिस्तंभजिनेन्द्राय नमः। ४. ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री अबालिशजिनेन्द्राय नमः। ६. ॐ ह्रीं श्री प्रवादिजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री भूमानन्दजिनेन्द्राय नमः। ८. ॐ ह्रीं श्री त्रिनयनजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री विद्वानजिनेन्द्राय नमः। १०. ॐ ह्रीं श्री परमात्मप्रसंगजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री भूमीन्द्रजिनेन्द्राय नमः। १२. ॐ ह्रीं श्री गोस्वामीजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री कल्याणप्रकाशितजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री मंडलजिनेन्द्राय नमः। १५. ॐ ह्रीं श्री महावसुजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री उदयवानजिनेन्द्राय नमः। १७. ॐ ह्रीं श्री दिव्यज्योतिर्जिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री प्रबोधेशजिनेन्द्राय नमः। १९. ॐ ह्रीं श्री अभयांकजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री प्रमितजिनेन्द्राय नमः। २१. ॐ ह्रीं श्री दिव्यस्फारकजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री व्रतस्वामिजिनेन्द्राय नमः। २३. ॐ ह्रीं श्री निधानजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री त्रिकर्माजिनेन्द्राय नमः।

(२२)

पूर्वपुष्करार्ध द्वीपसंबंधी ऐरावतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री कृतिनाथजिनेन्द्राय नमः। २. ॐ ह्रीं श्री उपविष्टजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री देवादित्यजिनेन्द्राय नमः। ४. ॐ ह्रीं श्री आस्थानिकजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री प्रचंद्रजिनेन्द्राय नमः। ६. ॐ ह्रीं श्री वेषिकजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री त्रिभानुजिनेन्द्राय नमः। ८. ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री वज्रांगजिनेन्द्राय नमः। १०. ॐ ह्रीं श्री अविरोधीजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री अपापजिनेन्द्राय नमः। १२. ॐ ह्रीं श्री लोकोत्तरजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री जलधिशेषजिनेन्द्राय नमः। १४. ॐ ह्रीं श्री विद्योतजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री सुमेरुजिनेन्द्राय नमः। १६. ॐ ह्रीं श्री विभावितजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री वत्सलजिनेन्द्राय नमः। १८. ॐ ह्रीं श्री जिनालयजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री तुषारजिनेन्द्राय नमः। २०. ॐ ह्रीं श्री भुवनस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री सुकामजिनेन्द्राय नमः। २२. ॐ ह्रीं श्री देवाधिदेवजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री अकारिमजिनेन्द्राय नमः। २४. ॐ ह्रीं श्री बिंबितजिनेन्द्राय नमः।

(२३)

पूर्वपुष्करार्ध द्वीपसंबंधी ऐरावतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री शंकरजिनेन्द्राय नमः। २. ॐ ह्रीं श्री अक्षवासजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री नग्नजिनेन्द्राय नमः। ४. ॐ ह्रीं श्री नग्नाधिपतिजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री नष्टपाखंडजिनेन्द्राय नमः। ६. ॐ ह्रीं श्री स्वप्नवेदजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री तपोधनजिनेन्द्राय नमः। ८. ॐ ह्रीं श्री पुष्पकेतुजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री धार्मिकजिनेन्द्राय नमः। १०. ॐ ह्रीं श्री चंद्रकेतुजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री अनुरक्तज्योतिजिनेन्द्राय नमः। १२. ॐ ह्रीं श्री वीतरागजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री उद्योतजिनेन्द्राय नमः। १४. ॐ ह्रीं श्री तपोपेक्षजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री मधुनादजिनेन्द्राय नमः। १६. ॐ ह्रीं श्री मरुदेवजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री दमनाथजिनेन्द्राय नमः। १८. ॐ ह्रीं श्री वृषभस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री शिलातनजिनेन्द्राय नमः। २०. ॐ ह्रीं श्री विश्वनाथजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रजिनेन्द्राय नमः। २२. ॐ ह्रीं श्री नंदजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री तमोहरजिनेन्द्राय नमः। २४. ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मजजिनेन्द्राय नमः।

(२४)

पूर्वपुष्करार्ध द्वीपसंबंधी ऐरावतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री यशोधरजिनेन्द्राय नमः। २. ॐ ह्रीं श्री सुकृतनाथजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री अभयघोषजिनेन्द्राय नमः। ४. ॐ ह्रीं श्री निर्वाणजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री व्रतवासजिनेन्द्राय नमः। ६. ॐ ह्रीं श्री अतिराजजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री अश्वदेवजिनेन्द्राय नमः। ८. ॐ ह्रीं श्री अर्जुनजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री तपश्चन्द्रजिनेन्द्राय नमः। १०. ॐ ह्रीं श्री शारीरिकजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री महेशजिनेन्द्राय नमः। १२. ॐ ह्रीं श्री सुग्रीवजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री दृढप्रहारजिनेन्द्राय नमः। १४. ॐ ह्रीं श्री अम्बरीकजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री दयातीतजिनेन्द्राय नमः। १६. ॐ ह्रीं श्री तुम्बरजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री सर्वशीलजिनेन्द्राय नमः। १८. ॐ ह्रीं श्री प्रतिजातजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री जितेन्द्रियजिनेन्द्राय नमः। २०. ॐ ह्रीं श्री तपादित्यजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री रत्नाकरजिनेन्द्राय नमः। २२. ॐ ह्रीं श्री देवेशजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री लांछनजिनेन्द्राय नमः। २४. ॐ ह्रीं श्री सुप्रदेशजिनेन्द्राय नमः।

(२५)

पश्चिमपुष्करार्ध द्वीपसंबंधी भरतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री पद्मचन्द्रजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री रत्नांगजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री अयोगिकेशजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री सर्वार्थजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री ऋषिनाथजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री हरिभद्रजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री गुणाधिपजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री पारत्रिकजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मनाथजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री मुनीन्द्रजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री दीपकजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री राजर्षिजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री विशाखदेवजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री अनिंदितजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री रविस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री सोमदत्तजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री जयस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री मोक्षनाथजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री अग्रभासजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री धनुःसंगजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री रोमांचकजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री मुक्तिनाथजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री प्रसिद्धनाथजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री जितेशजिनेन्द्राय नमः।

(२६)

पश्चिमपुष्करार्ध द्वीपसंबंधी भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री सर्वांगस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री पद्माकरजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री प्रभाकरजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री बलनाथजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री योगीश्वरजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मांगजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री व्रतचलातीतजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री कलंबकजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री परित्यागजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री निषेधिकजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री पापापहारिजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री सुस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री मुक्तिचंद्रजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री अप्राशिकजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री जयचंद्रजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री मलाधारिजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री सुसंयतजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री मलयसिंधुजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री अक्षधरजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री देवधरजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री देवगणजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री आगमिकजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री विनीतजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री रतानंदजिनेन्द्राय नमः।

(२७)

पश्चिमपुष्करार्ध द्वीपसंबंधी भरतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री प्रभावकजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री विनतेंद्रजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री सुभावकजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री दिनकरजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री अगस्त्येजीजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री धनदत्तजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री पौरवजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री जिनदत्तजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री मुनिसिंधुजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री आस्तिकजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री भवानीकजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री नृपनाथजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री नारायणजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री प्रशमौकजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री भूपतिजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री सुदृष्टिजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री भवभीरुजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री नंदनजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री भार्गवजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री सुवसुजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री परावशजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री वनवासीकजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री भरतेशजिनेन्द्राय नमः।

(२८)

पश्चिमपुष्करार्ध द्वीपसंबंधी ऐरावतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री उपशांतजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री फाल्गुणजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री पूर्वासजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री सौधर्मजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री गौरिकजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री त्रिविक्रमजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री नरसिंहजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री मृगवसुजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री सोमेश्वरजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री सुधासुरजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री अपापमल्लजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री विवाधजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री संधिकस्वामिजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री मान्धात्रजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री अश्वतेजोजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री विद्याधरजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री सुलोचनजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री मौननिधिजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री अम्बरीकजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री चित्रगणजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री मणिरिंद्रजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री सर्वकालजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री भूरिश्रवणजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री पुण्यांगजिनेन्द्राय नमः।

(२९)

पश्चिमपुष्करार्ध द्वीपसंबंधी ऐरावतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री गांगेयकजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री नल्लवासवजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री भीमजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री दयाधिकजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री सुभद्रजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री स्वामिजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री हनिकजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री नंदिघोषजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री रूपबीजजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री वज्रनाथजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री संतोषजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री सुधर्मजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री फणीश्वरजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री वीरचन्द्रजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री मेधानिकजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री स्वच्छनाथजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री कोपक्षयजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री अकामजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री धर्मधामजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री सूक्तिसेनजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री क्षेमंकरजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री दयानाथजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री कीर्तिपजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री शुभंकरजिनेन्द्राय नमः।

(३०)

पश्चिमपुष्करार्ध द्वीपसंबंधी ऐरावतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

१. ॐ ह्रीं श्री अदोषिकजिनेन्द्राय नमः।
२. ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवजिनेन्द्राय नमः।
३. ॐ ह्रीं श्री विनयानंदजिनेन्द्राय नमः।
४. ॐ ह्रीं श्री मुनिभारतजिनेन्द्राय नमः।
५. ॐ ह्रीं श्री इंद्रकजिनेन्द्राय नमः।
६. ॐ ह्रीं श्री चंद्रकेतुजिनेन्द्राय नमः।
७. ॐ ह्रीं श्री ध्वजादित्यजिनेन्द्राय नमः।
८. ॐ ह्रीं श्री वसुबोधजिनेन्द्राय नमः।
९. ॐ ह्रीं श्री मुक्तिगतजिनेन्द्राय नमः।
१०. ॐ ह्रीं श्री धर्मबोधजिनेन्द्राय नमः।
११. ॐ ह्रीं श्री देवांगजिनेन्द्राय नमः।
१२. ॐ ह्रीं श्री मारीचिकजिनेन्द्राय नमः।
१३. ॐ ह्रीं श्री सुजीवनजिनेन्द्राय नमः।
१४. ॐ ह्रीं श्री यशोधरजिनेन्द्राय नमः।
१५. ॐ ह्रीं श्री गौतमजिनेन्द्राय नमः।
१६. ॐ ह्रीं श्री मुनिशुद्धिजिनेन्द्राय नमः।
१७. ॐ ह्रीं श्री प्रबोधिकजिनेन्द्राय नमः।
१८. ॐ ह्रीं श्री सदानीकजिनेन्द्राय नमः।
१९. ॐ ह्रीं श्री चारित्रनाथजिनेन्द्राय नमः।
२०. ॐ ह्रीं श्री शतानंदजिनेन्द्राय नमः।
२१. ॐ ह्रीं श्री वेदार्थजिनेन्द्राय नमः।
२२. ॐ ह्रीं श्री सुधानीकजिनेन्द्राय नमः।
२३. ॐ ह्रीं श्री ज्योतिर्मुखजिनेन्द्राय नमः।
२४. ॐ ह्रीं श्री सुराघ्र्यजिनेन्द्राय नमः।

तीस चौबीसी मंत्र समाप्त

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-श्री सिद्धचक्र का पाठ.....

श्री तीस परम चौबीस, सात सौ बीस जिनेश्वर ध्याऊँ,
भवबंधन शीघ्र मिटाऊँ।
त्रय लोक कहे परमागम में,
है मध्यलोक इनके मधि में।
कृत्याकृत्रिम जिनचैत्य वंदना गाऊँ,
भवबंधन शीघ्र मिटाऊँ।
ढाई द्वीपों में पाँच भरत,
है पाँच क्षेत्र शुभ ऐरावत।
दस क्षेत्रों के त्रैकालिक जिनवर ध्याऊँ,
भवबंधन शीघ्र मिटाऊँ।
सुर इन्द्र सदा वंदन करते,
हम भी परोक्ष अर्चन करते।
प्रत्यक्ष देशना मिले भावना भाऊँ,
भवबंधन शीघ्र मिटाऊँ।
जिसने सच्चा श्रद्धान किया,
निज आत्मा का उत्थान किया।
इक चाह "चन्दनामती" सिद्धपद पाऊँ,
भवबंधन शीघ्र मिटाऊँ।